SALToC Project
Title: Ālocanā (Delhi, India)
Imprint: Dillī : Rājakamala Prakāśana Prāiveṭa lī
OCLC: 4094931
No. 43 (Oct-Dec 2011)
TOC Provided by Center for Research Libraries

आलोचना

त्रैमासिक

सहस्राब्दी अंक तैंतालीस

अक्टूबर-दिसम्बर 2011

प्रधान सम्पादक
नामवर सिंह

सम्पादक
अरुण कमल

सहसम्पादक
आर. चेतनक्रान्ति

कला सम्पादक
हरीश आनन्द

प्रबन्ध सम्पादक
अशोक महेश्वरी

अनुक्रम

सम्पादकीय : मेरी भी आभा है इसमें 5

नागार्जुन : हस्तलिपि 7
अन्त में पृथ्वी की गोद : **शोभाकान्त** 10
नागार्जुन : **उषाकिरण खान** 19

जनराग और जीवनराग (नागार्जुन की कविताएँ) : **प्रेम रंजन अनिमेष** 24
सबके सुख की लालसा : अकाल में पका हुआ कटहल : **मनोज कुमार झा** 28
सम्पूर्णता के कवि : नागार्जुन : **निशान्त** 32

तुममें व्यापे विद्यापति को... : **प्रभात कुमार मिश्र** 40
नागार्जुन की कविता : लोकचेतना, राजनीति और हमारा समय : **सुधीर रंजन सिंह** 47
नागार्जुन-काव्य में शिल्पगत प्रयोग : **खगेन्द्र ठाकुर** 57
समग्रता का आह्वान : **विजय बहादुर सिंह** 67
नागार्जुन : आज : **परमानन्द श्रीवास्तव** 74
नव-औपनिवेशिक संकट : नागार्जुन की लड़ाई : **शम्भुनाथ** 78
नागार्जुन की कविता में प्रतिरोध का स्वर : **चौथीराम यादव** 101

पाठालोचन : 'कल्पना के पुत्र, हे भगवान' के बहाने नागार्जुन का कवि-कर्म : **कमलानन्द झा** 108
नागार्जुन और सभ्यता का 'कुम्भीपाक' : **रूपा गुप्ता** 113
भस्मांकुर—वस्तु, वास्तु, स्रोत और स्वरूप : **प्रेमशंकर रघुवंशी** 119
अन्न और अन्य : नागार्जुन के अनन्य : **बलराम तिवारी** 123
सीधे-सादे शब्द हैं भाव बड़े ही गूढ़ : **रवि श्रीवास्तव** 129
नागार्जुन—तप्त जन-मानस के क्षुब्ध अन्तर्यामी : **प्रो. जयमोहन एम.एस.** 140
भूमिजा में आधुनिकीकरण : **सी.आर. राजश्री** 146

नागार्जुन की जनवादी कविता : **संजय रणखांबे** 156
नागार्जुन के उपन्यास : **सुरेश सलिल** 160
नागार्जुन का 'बलचनमा' : एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण : **डॉ. सुभाष शर्मा** 168